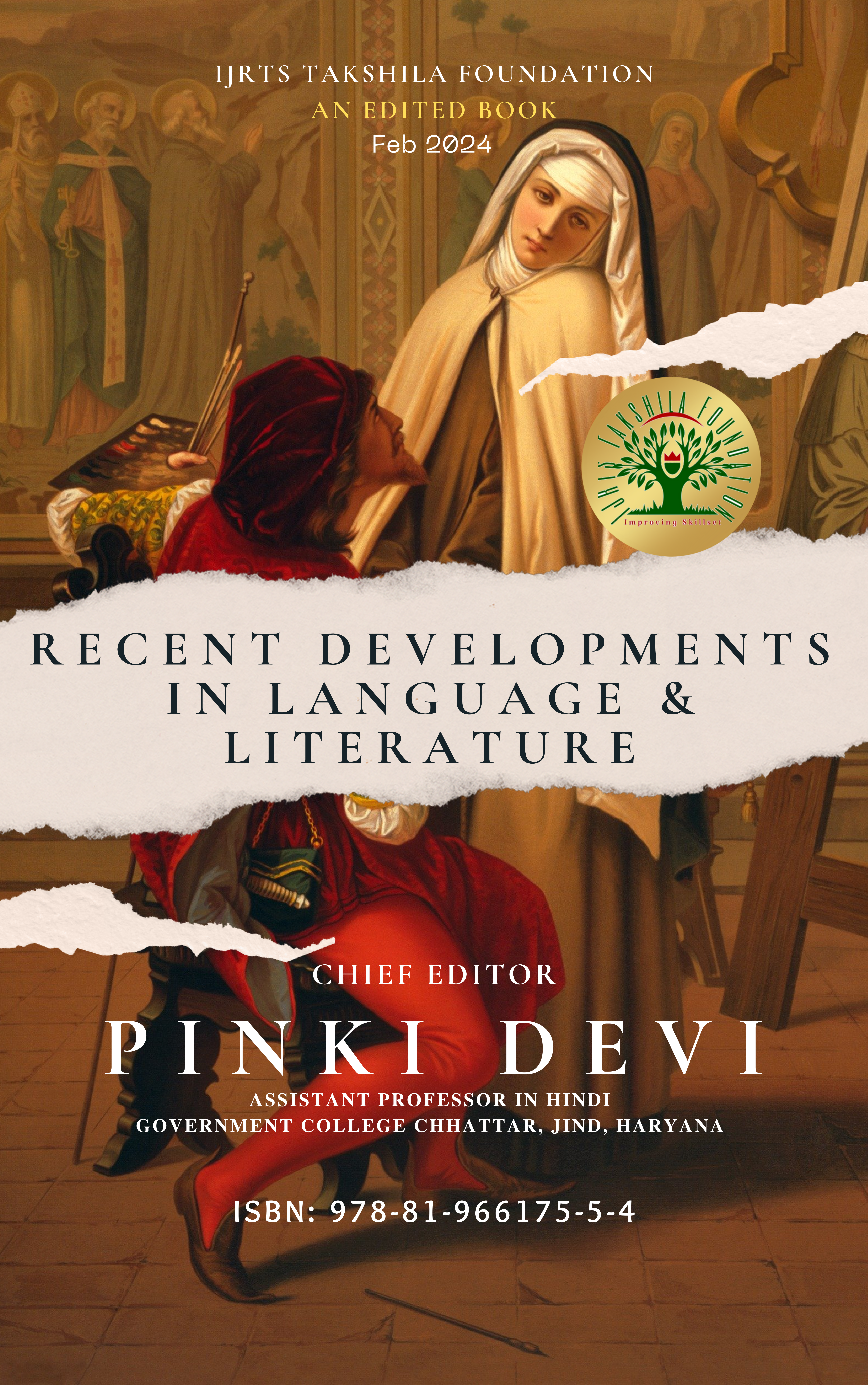

IJRTS TAKSHILA FOUNDATION

AN EDITED BOOK

Feb 2024

RECENT DEVELOPMENTS IN LANGUAGE & LITERATURE

CHIEF EDITOR

PINKI DEVI

ASSISTANT PROFESSOR IN HINDI

GOVERNMENT COLLEGE CHHATTAR, JIND, HARYANA

ISBN: 978-81-966175-5-4

Invited Manuscripts

RECENT DEVELOPMENTS IN LANGUAGE & LITERATURE

20 February 2024

An Edited Book

Chief Editor

Pinki Devi

Assistant Professor, Department of Hindi
Govt. College Chhattar, Jind, Haryana

Recent Developments in
Language & Literature
ISBN: 978-81-966175-5-4

Editors

Dr. Pallavi Arya

Associate Professor, Department of English

F.C. College for Women, Hisar, Haryana

Dr. Mukesh Kumar

Assistant Professor, Department of Sanskrit

Govt. College Hisar, Haryana

Dr. Bratati Dey

Post Doctoral Fellow, ICSSR,

Shaheed Bhagat Singh College, University of Delhi, New Delhi

Dr. Seema Dalal

Assistant Professor, Department of English

Hindu Kanya Mahavidyalaya, Jind, Haryana

Dr. Rajesh Saini

Assistant Professor, Department of Computer Science

Government College Ateli, Mahendragarh, Haryana

Publications
A Venture of IJRTS Takshila Foundation

© 2024, IJRTS Takshila Foundation
This book is an accurate reproduction of the original. Any marks, names, colophons, imprints, logos, or symbols or identifiers that appear on or in this book, except for those of IJRTS Publications, are used only for historical reference and accuracy and are not intended to designate origin or imply any sponsorship by or license from any third party.

Limits of Liability and Disclaimer of Warranty
The authors and publishers of this book have tried their best to ensure that the derivations, procedures & functions contained in the book are correct. However, the author and the publishers make no warranty of any kind, expressed or implied, with regard to these derivations, procedures & functions or the documentation contained in this book. The author and the publishers shall not be liable in any event for any damages, incidental or consequential, in connection with, or arising out of the furnishing, performance or use of these derivations, procedures & functions. Product names mentioned are used for identification purposes only and may be trademarks of their respective persons or companies.
The disclaimer of warranties and limitation of liability provided above shall be interpreted in a manner that, to the extent possible, most closely approximates an absolute disclaimer and waiver of all liability. Publisher may be reached at ijrtstakshilafoundation@gmail.com

ISBN: 978-81-966175-5-4
Price: ₹ 999

Published by Dr. Vipin Mittal for IJRTS Takshila Foundation,
71-75 Shelton Street, Covent Garden, London WC2H 9JQ ENGLAND
Printed in India
by Mittal Printers, SCF#10, Opposite DRDA, Jind-126102 INDIA
Bound in India
By Satyawaan Binders, SCF#09, Opposite DRDA, Jind-126102 INDIA

Dhanpat Rai Srivastava, better known as Munshi Premchand based on his pen name Premchand, was an Indian writer famous for his modern Hindustani literature. Premchand was a pioneer of Hindi and Urdu social fiction. He was one of the first authors to write about caste hierarchies and the plights of women and laborers prevalent in the society of late 1880s. He is one of the most celebrated writers of the Indian subcontinent, and is regarded as one of the foremost Hindi writers of the early twentieth century. His works include Godaan, Karmabhoomi, Gaban, Mansarovar, Idgah. He published his first collection of five short stories in 1907 in a book called Soz-e-Watan (Sadness of the Nation). His works include more than a dozen novels, around 300 short stories, several essays and translations of a number of foreign literary works into Hindi. Premchand was commemorated with the issue of a special 30-paise postage stamp by India Post on 31 July 1980.

Recent Developments in Language & Literature
An Edited Book
ISBN: 978-81-966175-5-4

Index

CHAPTER		PAGES
I.	**मुंशी प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक चेतना**	
	By: पिंकी देवी	01
II.	**भीमराव अम्बेडकर का संक्षिप्त जीवन परिचय व प्रभावित करने वाले तत्व**	
	By: डॉ. ईशा दत्ता	05

This page is intentionally left blank.

Recent Developments in Language & Literature
An Edited Book
ISBN: 978-81-966175-5-4

मुंशी प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक चेतना

पिंकी देवी

सहायक प्राध्यापिका, हिंदी विभाग

राजकीय महाविद्यालय छात्तर, जींद, हरियाणा, भारत

ईमेल: pinkidevibamania1984@gmail.com

प्रस्तावना

मुंशी प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक चेतना का अद्‌भुत प्रस्तुतिकरण हमें भारतीय साहित्य के विविध आयामों को समझने का अवसर प्रदान करता है। प्रेमचंद के उपन्यासों में समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर करने के माध्यम से, हम उनके कामों के माध्यम से समाज में स्थितियों को समझने में सक्षम होते हैं। इस प्रस्तावना में, हम मुंशी प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक चेतना की महत्वपूर्णता को समझने के लिए उनके कामों के विभिन्न पहलुओं की चर्चा करेंगे।

प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक चेतना का महत्वपूर्ण स्थान है, जो हमें भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं, जैसे वर्णव्यवस्था, सामाजिक अंतर, और व्यक्तिगत उत्थान की दिशा में दृष्टिकोण प्रदान करता है। हम इस शोध में प्रेमचंद के उपन्यासों के माध्यम से विभिन्न समाजिक संदेशों, चुनौतियों, और समस्याओं की विस्तृत विश्लेषण करेंगे ताकि हम समाज के विकास और सुधार के लिए कुशलतापूर्वक समाधान ढूंढ सकें।

इस शोध के माध्यम से हमें प्रेमचंद के उपन्यासों में विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों के बारे में समझने का अवसर मिलेगा और हमें उनके उपन्यासों के माध्यम से सामाजिक सुधार और प्रेरणा की दिशा में नई दिशाएं प्राप्त होंगी।

मुख्य भाग

मुंशी प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक चेतना के मुख्य भाग में विभिन्न पहलुओं का विवरण होता है। इस भाग में उनके उपन्यासों में समाज के विभिन्न परिदृश्यों का विवरण किया जाता है, जिसमें जातिवाद, असमानता, उत्पीड़न, और सामाजिक संरचना की समस्याओं का उजागर किया जाता है।

इस भाग में, उनके प्रमुख उपन्यासों के माध्यम से, समाज के विभिन्न वर्गों के बीच संघर्ष, असमानता, और अन्याय के परिदृश्यों का विवरण किया जाता है। वे समाज में होने वाले अन्यायों और असमानताओं को उजागर करते हैं और समाज को उन्हें सुधारने के लिए प्रेरित करते हैं।

ISBN: 978-81-966175-5-4

मुंशी प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक चेतना के मुख्य भाग में व्यक्तिगत, सामाजिक और राजनैतिक संघर्ष के परिदृश्यों का विवरण होता है, जो समाज में उत्थान के लिए एक महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है।

मुंशी प्रेमचंद के प्रमुख उपन्यासों में से कुछ प्रमुख निम्नलिखित हैं:

1. गबन: इस उपन्यास में, प्रेमचंद ने भूमिहीनता, भ्रष्टाचार, और धर्म–संस्कृति के विरोध को उजागर किया।

2. निर्मला: इस कहानी में, वे सामाजिक और धार्मिक प्रतिष्ठाओं की भूमिका पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

3. रंगभूमि: यह उपन्यास समाज में विभिन्न वर्गों के बीच राजनीतिक और सामाजिक संघर्ष को उजागर करता है।

4. काफान: इस उपन्यास में, प्रेमचंद ने लड़कियों के अधिकारों और समाज में स्त्री की स्थिति पर ध्यान केंद्रित किया।

5. गोदान: यह उपन्यास समाज में गरीबी, समाजिक न्याय, और मानवीय संबंधों के मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करता है।

6. कर्मभूमि: इस उपन्यास में, प्रेमचंद ने समाज में विभिन्न वर्गों के बीच आत्मविश्वास और समानता के महत्व को उजागर किया।

इन उपन्यासों में, प्रेमचंद ने समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया और विभिन्न समाजिक मुद्दों पर अपने दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया। उन्होंने विविधताओं, विरोधों, और संघर्षों के बीच समाज के वास्तविकताओं का अध्ययन किया और उन्हें अपनी कहानियों के माध्यम से समझाने का प्रयास किया। इन उपन्यासों में सामाजिक चेतना का अद्भुत प्रस्तुतिकरण है जो उनके कामों को अद्वितीय बनाता है।

उपन्यासों में सामाजिक चेतना की प्रकृति

मुंशी प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक चेतना का प्रकृति व्यापक और गहरा है। उनके उपन्यासों में विभिन्न सामाजिक मुद्दे और समस्याएं उठाई जाती हैं, जो समाज की वास्तविकता को प्रतिबिंबित करती हैं। निम्नलिखित प्रमुख पहलुओं में प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक चेतना की प्रकृति का विवेचन किया जा सकता है:

ISBN: 978-81-966175-5-4

1. समाजिक असमानता: प्रेमचंद के उपन्यासों में विभिन्न वर्गों के बीच समाजिक असमानता का चित्रण किया गया है। उनके कामों में गरीबी, जाति व्यवस्था, और समाज में असमानता के कारणों का प्रतिबिंबित होता है।

2. न्याय और न्यायाधीश: प्रेमचंद के उपन्यासों में न्याय की प्राथमिकता और न्यायाधीशों की भूमिका को उजागर किया गया है। वे अन्याय और भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ने वाले न्यायिक व्यक्तियों के किस्से बताते हैं।

3. स्त्री और समाज: प्रेमचंद के उपन्यासों में स्त्री की स्थिति और समाज में उसकी प्रतिष्ठा को लेकर विवाद उठाया गया है। उनके कामों में स्त्री के अधिकारों और समाज में उसकी स्थिति पर चिंता व्यक्त की गई है।

4. धार्मिक विवाद: प्रेमचंद के उपन्यासों में धार्मिक विवादों और धर्म–संस्कृति के प्रति आलोचना का सामाजिक संदेश दिया गया है। वे धर्मिक अंधविश्वास और पारंपरिक धार्मिक अनुष्ठानों को खुलकर चुनौती देते हैं।

मुंशी प्रेमचंद के उपन्यासों में ये मुद्दे उनकी सामाजिक चेतना को प्रतिबिंबित करते हैं और सामाजिक सुधार की दिशा में उनकी चिंता को दर्शाते हैं। उनके उपन्यासों में व्यक्तिगत, सामाजिक, और राजनीतिक मुद्दों पर उनकी संवेदनशीलता और चेतना का प्रकटीकरण होता है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के भाग में, मुंशी प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक चेतना के महत्वपूर्ण पहलुओं का सार होता है। उनके उपन्यासों के माध्यम से हमें समाज में मौजूद असमानता, अधिकारों की असमानता, और अन्याय की समस्याओं का सामना करने का अवसर प्राप्त होता है।

उन्होंने अपने उपन्यासों में समाज के विभिन्न वर्गों और समुदायों के बीच बंधनों का विवरण किया है, जो हमें समाज के वास्तविक रूप को समझने में मदद करता है। उनके काम में समाज के संघर्षों और विभाजन की प्रक्रिया का अध्ययन हमें समाज में सुधार के लिए प्रेरित करता है।

इसलिए, निष्कर्ष में हम संक्षेप में यह कह सकते हैं कि मुंशी प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक चेतना का अध्ययन साहित्य के प्रेमियों और विद्वानों के लिए महत्वपूर्ण है और हमें समाज में सुधार और समृद्धि की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करता है।

ISBN: 978-81-966175-5-4

सन्दर्भ

1. रामविलास, शर्मा (2008). प्रेमचंद और उनका युग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ० 17. ISBN: 978–81–267–0505–4.

2. अमृतराय (1976). प्रेमचंद कलम का सिपाही. इलाहाबाद: हंस प्रकाशन. पृ० 616–17

3. वीर भारत, तलवार (2008). किसान राष्ट्रीय आन्दोलन और प्रेमचन्द: 1918–22. नयी दिल्ली: वाणी प्रकाशन. पृ० 19–20.

4. बाहरी, डॉ० हरदेव (१६८६). साहित्य कोश, भाग–2,. वाराणसी: ज्ञानमंडल लिमिटेड. पृ० ३५७.

5. प्रेमचंद की नारी दृष्टि, डॉ शाशमदराज, अनशीलन, 1983 पृ० 46

6. हंसराज रहबर, प्रेमचंद जीवन कला, आत्तमाराम एंड संस, ददल्ली 1962.

7. गोपाल, मदन (२००२), प्रेमचंद की आत्मकथा, नई दिल्ली, भारतरू प्रभात प्रकाशन, ISBN: 8173153140।

8. प्रेमचंद (२००३), प्रेमचंद की ७५ लोकप्रिय कहानियाँ, दिल्ली, भारतरू राजा प्रकाशन, ISBN: 8176046663।

9. देवी, शिवरानी (२००६), प्रेमचंद घर में, दिल्लीरू आत्माराम एण्ड सन्स, ISBN: 8188742090।

10. निर्मल वर्मा,, कमल किशोर गोयनका (२००४), प्रेमचंद रचना संचयन, नई दिल्लीरू साहित्य अकादमी, ISBN: 81–7201–663–8।

11. वाजपेयी, नंद दुलारे, प्रेमचंद एक साहित्यिक विवेचन, ISBN: 8126700688।

Publications
A Venture of IJRTS Takshila Foundation

Recent Developments in Language & Literature
An Edited Book
ISBN: 978-81-966175-5-4

भीमराव अम्बेडकर का संक्षिप्त जीवन परिचय व प्रभावित करने वाले तत्व

डॉ. ईशा दत्ता

प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

ईमेल: ishadutta1968@yahoo.com

प्रस्तावना

भारत रत्न डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर को एक महान् मानवतावादी, बुद्धिजीवी, कानूनवेत्ता, अर्थशास्त्री, समाजवादी और सामाजिक न्याय के लिये लड़ने वाले योद्धा के रूप में जाने जाते है । 20वीं सदी में पैदा होने वाले वे एक महानतम् व्यक्तियों में शामिल थे जिन्होंने वास्तव में लोकतन्त्र की धारणा को सभी तक पहुँचाने का प्रयास किया है । सामान्यत उन्हें "भारत का मनु" "भारत के इब्राहिम लिंकन" एवं "दलितों के मसीहा" के रूप में जाना जाता है । जब भी कहीं अम्बेडकर का नाम आता है तो आम जन मानस में दलितों की कोई योजना या कार्य विधि की बात चलाई जाती है । सभी मनुष्यों में लोकतन्त्र, समानता, स्वतन्त्रता तथा भातृत्व की भावना फैलाने वाले इस शख्स को आज तक भी अपनी वास्तविक पहचान नहीं मिली ।

ये सच है कि इन्होंने दलित वर्ग के मनुष्यों हेतु बहुत ही अमूल्य योगदान दिया है अपने इसी योगदान के लिए सामाजिक सुधारों का नेतत्व कर रहे संगठनों के बड़े पैमाने पर डॉ॰ अम्बेडकर को आजादी के बाद भारत का राष्ट्र पिता बनाने पर जौर दिये रखा । परन्तु इनका मानवतावाद कहीं भी सवर्ण जाति के लोगों के साथ भेदभाव नहीं करता है । उन्होंने तीन दशकों तक से भी अधिक अपने सार्वजनिक जीवन में, अपने आपको एक मनीषी, शिक्षक, कुशल, प्रशासक, राजनीतिज्ञ, समाज सुधारक, दलित तथा नारी सुधारक के रूप में अपने आपको स्थापित किया । उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन जातिवाद, ब्राह्मणवाद, पादरीवाद, अन्याय, शोषण, छुआछूत, नारी–दासता, दास प्रथा, सती प्रथा, रखेल प्रथा बेगार, अलोकतान्त्रित भारतीय व्यवस्था के विरूद्ध संघर्ष में लगा दिया । अतः इस अध्याय में भीमराव अम्बेडकर की जीवन–यात्रा का चहुँमुखी वर्णन दिया जायेगा जिसके कारण उन्हें भारत का "मार्टिन लूथर" किंग भी कहा जाता है ।

वैसे तो किसी भी महान् व्यक्ति के जीवन और उद्देश्यों की व्याख्या करना बहुत ही कठिन होता है, विशेषकर उस स्थिति में जब उस समय उस विशेष के सामने घोर अंधेरा हो परन्तु फिर भी उपलब्ध तथ्यों एवं प्रचलित जन–भावनाओं के आधार पर प्रस्तुत अध्याय में भीमराव अम्बेडकर के जीवन परिचय तथा प्रभावित करने वाले कारकों पर संक्षिप्त नजर डाली गई है । किसी भी व्यक्ति के जीवन पर

ISBN: 978-81-966175-5-4

तत्कालीन परिस्थितियों का प्रभाव अवश्य पड़ता है। जीवन व विचारों का मूल्यांकन हेतु उसके युग की परिस्थितियों का अध्ययन करना अत्यन्त आवश्यक होता है ।

भीमराव का जीवनकाल (1891—1956) तक का है परन्तु किसी भी समाज की स्थिति एक प्रक्रिया होती हैं । उसी तरह उस समाज की स्थिति को यदि अध्ययन किया जाये तो पता चलता है कि जातिप्रथा ने समाज के सारे संबंधों की संचालित कर रखा था चाहे वह सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक या व्यक्तिगत ही क्यों न हो । उस समय भारत सामाजिक भेदभाव किदासता से स्वतन्त्रता का विचार संघर्ष कर रहा था । पूरे समाज में असमानता व्याप्त थी । समाज में दलित व महिलाओं की स्थिति बहुत दयनीय थी व ना ही किसी भी प्रकार का प्रयत्न सामान्यतः किया जाता था । पूरा का पूरा भारतीय इतिहास व समाज की इस कटु अवधारणा (जाति—व्यवस्था) को दे रहा था। उस समय की स्थिति को शब्दों में या कलम के माध्यम से ब्याँ करना, उस स्थिति की बेईज्जती करना है । अनुभव ही एकमात्र कसौटी है उसको महसूस करने की और इसी अंतिम व एकमात्र कसौटी की भीमराव अम्बेडकर ने ताउम्र महसूस किया तथा उससे नकारात्मक प्रभावित होने की वजह से बजाय उसी सामाजिक बुराई को समाप्त करने का बेबाक ईरादा अपने मन में संकलित किया ।

भारत एक हिन्दू बहुल देश है जिसकी 80ः से ज्यादा जनसंख्या हिन्दू धर्म को मानती है । इसी हिन्दू धर्म में मनुस्मृति के आधार पर समाज का विभाजन था जिसमें सबसे उपरी स्तर पर ब्राह्मण वर्ग, दूसरे स्तर पर क्षत्रिय, तीसरे पर वैश्य एवं चौथे स्तर पर शूद्रों को रखा गया है । प्रत्येक वर्ग के सामाजिक दायरे निश्चित किये गये । ऋग्वेद कालीन पुरूष शुक्त के अनुसार ब्रह्मा के मुख से ब्राह्मण की उत्पति के कारण उच्चतम स्थान, इसके बाद क्षत्रिय का भुजाओं से, वैश्य का जंघा से तथा शूद्र का जन्म पैरों से माना गया है । स्वयं भीमराव अम्बेडकर की रचनाओं में हिन्दी धर्म की पहेलियाँ तथा हिन्दूत्व का दर्शन में विस्तार से वर्णन किया है कि किस तरह मनुस्मृति ने अपने अज्ञान के आधार पर भारतीय समाज पर इतना ज्यादा बुरा प्रभाव डाला कि यदि इस जाति व्यवस्था, वर्ण—व्यवस्था, अस्पृश्यता के आधार पर प्रत्येक भारतीय का सिर शर्म से झुक जाता है और इस हीनता हेतु न केवल मनुस्मृति अपितु हिन्दू धर्म भी उतना ही जिम्मेवार है । "मनु के वक्तव्यों के उल्लेख 10.3— जाति की विशिष्टात से, उत्पति—स्थान का अध्ययन, अध्यापन एवं व्याख्यान आदि द्वारा नियम के धरण करने से और यज्ञोपवती संस्कार आदि की श्रेष्ठता से ब्राह्मण ही सब वर्णों का स्वामी है । दूसरा मनु के वक्तव्यों संख्या 1.96 — भूतों में प्राणधारी जीव श्रेष्ठ है, प्राणियों में बुद्धिजीवी श्रेष्ठ है, इनमें मनुष्य श्रेष्ठ है तथा मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ है ।"

भीमराव अम्बेडकर ने स्वयं भारतीय समाज पर बहुत ज्यादा अध्ययन किया है तथा अपने निष्कर्ष में पाया कि यह समाज पूर्णतः असमानता, शोषण, अन्याय, अवैज्ञानिकता, झूठ, फरेब, छलः कपट पर आधारित है

ISBN: 978-81-966175-5-4

। मनुस्मृति ने न केवल मनुष्यों बल्कि अन्य प्राकृतिक वस्तुओं तथा अन्य सामाजिक वस्तुओं पर भी अपनी लेखनी चलाई है । पुरी मनुस्मृति का अध्ययन करने पर पता चलता है कि वर्तमान में समाज में जो घटित हो रहा है उसको कौन संचालित कर रहा है व क्यों समाज में इतनी असमानता है । संक्षेप में उस समय का समाज जातिगत, धर्मगत, साम्प्रदायिक, उपनिवेशी, अन्याय आधारित समाज था जिसने अपनी संजीवनी पुराने धर्मग्रन्थों से ली है । और सारी जड़ जाति–व्यवस्था को मनु द्वारा संचालित व्यवस्था को दोषी माना तत्कालीन समाज में दलितों, अधूतों तथा स्त्रियों की स्थिति सबसे खराब थी तथा इस स्थिति हेतु जिम्मेवार था उस समय का धर्मगत समाज जिससे भीमराव अम्बेडकर को अपने जीवन का ध्येय मिला जो वास्तव में महानतम है । (1891–1956) के दौरान का भारतीय समाज बहुत प्रक्रियाओं के बाद बना जिसमें वैदिककाल, बौद्व काल, मध्यकाल, प्राचीन समाज, आधुनिक काल । इन सभी स्तरों में समाज के कुछ विशेष वर्गों की केवल जन्म व लिंग के आधार पर, जिसमें दलित, अधूत व महिला वर्ग मुख्यत है, जानबूझ कर सामाजिक लाभ से वंचित रखा गया जिसके फलस्वरूप अनमें समय–समय पर चेतना आई ।

प्राचीन काल में महात्मा बुद्ध का बुद्धिवाद, चार्वाक का भौतिकवाद, कपिलमुनि, कौत्स आदि द्वारा तथा मध्यकाल में रैदास, नानक, दादू–दयाल, कबीर द्वारा तथा आधुनिक काल में राजाराम मोहनराय, महात्मा गांधी (हाँलाकि गाँधी पर अम्बेडकर के मत भिन्न थे जब उन्होंने अछूत शब्द की हरिजन प्रयोग किया) ज्योतिबा फूले, सावित्रीबाई फूले, रामास्वामी पेरियार तथा अन्य समाज सुधारकों ने समाज की इस विषम परिस्थितियों में अपने विचार दिये । इन उपरीलिखित विचारकों (महिला–पुरूष/अन्य लिंग) तथा बचे हुए विचारक जो अपने–आपको समाज के आगे नहीं रख सके उन सभी का प्रधान वक्तव्य था – सबसे उपर मनुष्य ही एकमात्र सच है। लेकिन इन उपरी विचारों के आधार पर भारत–भूमि पर अछूतों, दलितों तथा महिलाओं पर अत्याचार होना बन्द नहीं हुआ बल्कि सामाजिक विषमता ने भी अपने आपको सुधारा व आधुनिक राजनीति व लोकतन्त्र के साथ समझौता किया फलतः अम्बेडकर के जन्मकाल व जीवनकाल के दौरान भी उस समय की स्थिति बहुत ज्यादा खराब थी । समाज का बहुत बड़ा भाग समाज के लाभ से वंचित था तथा काम के नाम पर इसी शोषित समाज की धार्मिक कर्तव्य के आधार पर याद किया जाता था । भारत देश में जो बाहरी शक्तियाँ आई उन्होंने कभी वर्ण या जाति व्यवस्था के विरोध में काम नहीं किया क्योंकि उनका मुख्य लक्ष्य परिवर्तन का नहीं, सता संचालन का था। ऊँच–नीच तथा छूआछूत की बीमारी ईस्लाम को मान्य नहीं थी परन्तु हिन्दुओं की देखा–देखी मुसलमानों में भी ऊँच–नीच का भेदभाव चलने लगा ।

जाति व्यवस्था तथा ईस्लामी संस्कृति के प्रभाव के कारण भारतीय स्त्री तथा शुद्र दोनों की स्थिति और भी बदतर हो गई । ऐसी विषम परिस्थितियों में मानवतावादी विचारक भीमराव अम्बेडकर का जन्म हुआ । इनका जन्म 14 अप्रैल 1891 ई. को महूँ छावनी में हुआ जो अब मध्यप्रदेश में है । इनका पिता का

ISBN: 978-81-966175-5-4

नाम रामजी मालौजी सकपाल तथा माता का नाम भीमाबाई था । इनका जन्म एक अछूत जाति (महार) में हुआ जो उस समय शुद्रों से भी नीच मानी जाती है । महार ही महाराष्ट्र के मूल निवासी है । महाराष्ट्र – महार जाति से ही बना है । महाराष्ट्र में 'महार' ही मुख्य अछूत जाति है । अछूत जाति के घर पैदा होने का अभिशाप तथा वरदान दोनों भीमराव को हुए । अभिशाप तो क्योंकि बचपन में ही उनके भविष्य का निर्धारण जन्म से ही हो गया था, बचपन में वह जितना पिड़ित हुआ, जागरूक भारतीय व विश्व समाज उसके प्रति सहानुभूति रखता है तथा वरदान इसलिये क्योंकि इसी विषय अवस्था में भीमराव तपकर विश्व के अग्रणी यथार्थवादी विचारक बने । घर वाले प्यार से इसे भीमा कहते थे । ऐसा माना जाता है कि इनकी माँ भीमाबाई इन्हें असीम प्यार करती थी । बालक भीमराव अपने माता–पिता की 14वी सन्तान थे व सभी से छोटे थे । भीम के जन्म के समय घर में लगभग एक सप्ताह तक खुशियों का समारोह छाया रहा क्योंकि उनसे पहली वाली संताने जन्म लेकर मर जाया करती थी । 14 बालकों में से भीम समेत पाँच संतान ही बची थी । इन पाँचों में एक भाई का नाम आनन्दराव और दूसरे का वसन्तराज तथा बहनों में एक का नाम मजुंला और दूसरी का तुलसी था । इनका पुरा नाम भीमराव राम जी अम्बेडकर था जो आगे चलकर डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के नाम से विख्यात हुआ। इनके पिता रामजी सकपाल संत कबीर के अनूयायी थे और इसी कारण उनके दिमाग में जाति वाद के लिए कोई स्थान नहीं था । कबीर की निर्गुणवाद पर उनका अटूट विश्वास था । कबीर का एक विख्यात दोहा है जो जाति पर भरपुर कटाक्ष करता है यथाः–

जाति–पाति पूछे नही कोई

हरि के भजै सों हरिं को होई ।

ईस्ट इंडिया कंपनी के शासनकाल के दौरान भीमराव के पुरखे अपना पैतृक काम छोड़कर कंपनी की सेना में नौकरी करने लगे थे । इस तरह इनके पिता को सेना का काम मिला । इस तरह पारिवारिक परिस्थिति सामाजिक विषमता से ग्रस्त व फिर उपर से इनके पिता का दृष्टिकोण । यदि भारतीय साहित्य में कबीर का साहित्य पढ़ा जाये तो पता चलता है कि किस तरह से कबीर का निर्गुणवाद उस समय समाज में प्रचलित जातिवाद व पाखण्ड का विरोध करता है । अब इसी परिस्थिति में यदि कोई उक्त समाज में उनके विचारों को ग्रहण करता है तो समाज का उस व्यक्ति महिला के प्रति कैसा रवैया होगा, सोचनीय है । सामान्यतः समाज में प्रचलित रूढ़िवादी विचारकों ने जब–जब इसके खिलाफ आवाज उठाई, तब–तब उन्हें समाज से तिरस्कार मिला जो बाद में समाज कल्याण का स्त्रोत बना । इस तरह पिता निर्गुणवाद कम उम्र में माता का देहांत हो जाने के कारण भीमराव अम्बेडकर का प्रारम्भिक जीवन कितना कष्टमय होगा, महसूस किया जा सकता है । इस तरह समाज–सुधारक का दृष्टिकोण सर्वप्रथम भीमराव अम्बेडकर को पिता से प्राप्त हुआ । नियमितता, परिश्रम, समाजसेवा, लगन

ISBN: 978-81-966175-5-4

इत्यादि गुणों का ज्ञान भीमराव को अपने पिता से मिला । पिता की सेवानिवृति होने पर, आजीविका संकट हुआ फलतः इनके पिता सातारा जिला के खाटव तालुका के गोरेगाँव नामक एक स्थान पर 1901 में खजान्ची की नौकरी करने चले गये । इसी दौरान भीमराव की माता की मृत्यु (1896) में देहान्त हो चुका था । इसी कारण पिता ने इन्हें भीमराव अम्बेडकर की बुआ के यहाँ भेज दिया जो सामान्यत बीमार रहा करती थी । उन्हें चलते–फिरने में दिक्कत होने की वजह से सामान्यतः भीमराव को अन्य बच्चों के साथ अपनी बुआ का भी ख्याल रखना पड़ता था ।

इनकी बुआ के असहाय होने की वजह से ये बच्चे (भीमराव) समेत अपना खाना स्वयं बनाते थे । यहाँ पर यह लिखना आवश्यक हो जाता है कि घर में खाना बनाना पूर्णता महिलाओं का काम है चाहे वह विवाहित हो या अविवाहित हो, सामान्यतः भारतीय संस्कृति में अब भी लड़कियों को सर्वप्रथम गृहिनी में दक्ष किया जाता है । बुआ की असहायता की वजह से भीम को भी गृहिणी जैसा काम अपनी बुआ के घर पर किया । खाना बनाने में लगने वाले परिश्रम की वजह से वे सामान्यतः पुलाव (भोजन का व्यंजन) बनाते थे । इन चारों बच्चों को स्कूल भी जाना पड़ता था तथा अपना खाना स्वयं भी बनाना पड़ता था। ये रोटी बनाना कम जानते थे तो पुलाव पर ही ज्यादा निर्भर रहते थे। इस तरह घर व समाज में सामान्य माहौल न मिलने की वजह से इनके बचपन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा । घर से बाहर, बचपन में अकूत अमानवीय यंत्रणा सहनी पड़ी । सार्वजनिक स्थान जैसे मंदिर, चौपाल, गली, कुँऐ, भोजनालय, आश्रम, सराय, यहाँ तक कि इन्हें नाई से बाल कटवाने तक का अधिकार नही था । इन सभी के पीछे मनुस्मृति का हाथ था । अछूतों के बाल सामान्यतः घरों पर ही काटे जाते थे । अतः भीमराव अम्बेडकर की बड़ी बहन ही इनके बाल काटा करती थी ।

अतः माता–पिता ने सामाजिक अनुमति व परिस्थितियों की प्रवाह न करते हुए सन् 1900 में यानि 9 वर्ष की आयु में भीमराव को सतारा के सरकारी हाई स्कूल में दाखिला दिलाया गया । भीमराव प्रतिदिन स्कूल जाने लगे परंतु भीमराव के कोमल हृदय पर जातिवाद, वर्णव्यवस्था व सामाजिक विषमता की ऐसी चोट पड़ी कि आगे चलकर भीमराव असमानता, जातिवाद, वर्णवाद, अन्याय के विश्व विश्चात विचारक के रूप में उभरे । स्कूल का वातावरण असामान्य था । विद्यार्थियों को जातीय आधार पर बैठाया जाता था । अछूत जाति के बच्चे सामान्यत अपमानित किये जाते थे । उन्हें क्लासरूम में सबसे पीछे बैठाया जाता था । उनके पानी–पीने का अलग कार्यक्रम था । वो स्वयं पानी नहीं पी सकते थे । स्कूल का चपड़ासी ही बर्तन के ऊपर से उन्हें पानी पिलाता था अधिकांश अध्यापक अछूतों को पढ़ाने में रूचि नहीं लेते थे । इसी कारण भीमराव को संस्कृत भाषा की बजाय फारसी पढ़नी पडी थी । संस्कृत न पढ़ाने का अध्यापक ने क्या तर्क दिया होगा, उस समय की परिस्थितियों के अनुसार यह हो सकता है– “नीच होकर देवभाषा संस्कृत पढ़ेगा, तुम्हारा काम चमड़े और सफाई का है, वहीं करना पड़ेगा । इस तरह की कल्पना को सत्यापन औमप्रकाश वाल्मीकी की आत्मकथा 'जूठन' प्रदान करता है जिसमें वर्तमान सन्दर्भ

ISBN: 978-81-966175-5-4

में भी ओमप्रकाश का शिक्षक उन्हें जातीय गाली देकर अपना वर्णित काम करने को कहता है । स्कूल के दौरान व घर वापस जाते समय भी भीम को अपमान सहना पड़ता था । एक बार जब वे स्कूल से घर जा रहे थे तो रास्ते में बारिश होने पर भीमराव एक घर के बाहर रूक जाते है परन्तु जब मकान मालिक को पता चलता है कि यह बाल अछूत ह तो वह उसे गाली देती है, मारपीट करती है तथा धक्के मारकर उसे बारिश में भिगने हेतु छोड़ देती है ।

वहीं दूसरी घटना में जब वे केवल सात साल के थे अपने एक कुटुम्बी भाई के साथ बैलगाड़ी से दूसरे गाँव जा रहे थे । मार्ग में उन्हें एक पण्डित मिला जिसने उस गाँव वाले से कहा – तू क्यों इन अछूत लड़कों को गाड़ी में बिठा कर ले जा रहा है? क्यों भीमा तेरी यह हिम्मत की नीच होकर हम द्विजो की बराबरी करेगा । इस तरह सतारा के स्कूल दिनों में भीमराव को लगातार अपमानित होना पड़ा । सामान्यतः केवल बोलकर ही नही, देखने मात्र से अपमानित किया जा सकता है । अंततः प्रारम्भिक शिक्षा के दौरान भीमराव सतत् अपमानित होते रहे, परन्तु शिक्षा से विमुख नहीं हुए। सन् 1904 में इनके पिता रामजी बंबई आ गये तथा इन्हें भी अपने साथ बम्बई लाकर एलफिस्टन हाई स्कूल में भर्ती कराया । छुआछुत की भावता तो यहाँ भी थी परन्तु सतारा से कम थी। भीमराव अम्बेडकर को यहां भी जातिवाद का शिकार होना पडा । एक दिन प्रश्न हल करने के लिये ज्यों ही अम्बेडकर श्यामपट्ट की तरफ बढ़े तो सभी सवर्ण बच्चे चिल्लाये और भागकर ब्लैक बोर्ड के पीछे रखे अपने खाने के डिब्बों को उठाया ताकि अछूत की छाया इन टिफिनों पर ना पडे । इसके अतिरिक्त कक्षा में पीछे बैठना, पानी के नल को हाथ न लगाना, कॉपी को दूर से दिखाना, सवर्णों से प्रश्न न पूछना, ना जाने क्या–क्या उनकी स्कूली दिनों की दिनचर्या बन चुकी थी । इन अपमान भरे शूलों ने इनके मन पर गहरी छाप छोड़ी व इन्हें हिन्दू धर्म से घृणा होने लगी ।

इस तरह विषम परिस्थितियों के बावजूद भीमराव अम्बेडकर ने 1907 में दसवीं की परीक्षा पास की 750 में से 282 अंक प्राप्त किये । यह अपने आप में एक अद्वितीय घटना थी कि अछूत होने पर भी तथा चारों तफर शिक्षा विरोधी वातावरण होने के बावजूद, उन्होंने बड़ी मेहनत व लगन से 10वीं पास किया । उस समय महार समुदाय से दसवीं पास करना, समुदाय हेतु अपार खुशियाँ लाया पुरा–का–पुरा परिवार खुश था । बस्ती के लोगों ने उनके सम्मान में एक उत्सव का आयोजन किया । उस उत्सव में भीमराव का अभिनन्दन किया गया। इसी उत्सव में मराठी के प्रसिद्ध लेखक श्री कृष्णा जी अर्जुन कैलुस्कर तथा श्री एस॰ के॰ बोले भी आये व यहाँ पर श्री कैलुस्कर ने भीमराव को अपनी स्वरचित पुस्तक "भगवान बुद्ध का चरित्र" भेंट की । इस पुस्तक ने भीमराव अम्बेडकर के जीवन पर अमिट छाप छोड़ी जिसे बादे में भीमराव का बुद्ध धर्म के प्रति लगाव देखा जा सकता है ।

ISBN: 978-81-966175-5-4

सत्य शोधक समाज की तरफ से इस आन्दोलकारी समारोह में ही प्रमुख वक्ताओं में श्री कृष्ण केलुस्कर ने कहा – "मैं भीमराव को जानता हूँ । भीम को कॉलेज की उच्च शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये ।" इसी तरह एक तरफ तो भीमराव को मनोबल मिला वहीं दूसरी तरफ अप्रैल 1906 में श्री भीखू वालंगकर की पुत्री कुमारी रमाबाई से भीमराव का विवाह सम्पन्न हुआ । उस समय भीमराव 14 तथा रमाबाई 9 वर्ष की थी । यहाँ पर देखा जा सकता है कि बाल–विवाह नामक प्रथा थी उस समय पाई जाती थी जिसका भीमराव तथा रमाबाई दोनो शिकार हुए । अम्बेडकर तथा रमाबाई की 5 संताने हुई– यशवंत, रमेश, गंगाधर, इन्दु और राजरत्न । परन्तु मात्र यशवंत राय ही जीवित बच सके । बाकी संतानों का बचपन में ही देहान्त हो गया था । यहाँ पर यह वर्णित है कि अम्बेडकर के भाई–बहन भी बाल–मृत्यु का शिकार हुए थे तथा उनके स्वयं की संताने भी । सामाजिक समारोह में प्रशंसा पाने के बाद व संबंधित समुदाय व परिवार वालों की तरफ से भी प्रोत्साहन के फलस्वरूप भीमराव अम्बेडकर ने आगे पढ़ने के फैसले को बरकरार रखा । आगे की पढाई में सहायता हेतु श्री कैलुस्कर ने भीमराव अम्बेडकर की भेट महाराजा बड़ौदा श्रीमंत सयाजी गायकवाड़ से करवाई, जिन्होंने उच्च शिक्षा के लिये 25 रूपये प्रतिमाह की छात्रवृत्रि स्वीकार की । इसी आधार पर भीमराव अपनी महाविद्यालय की पढ़ाई जारी रख सके ।

सन् 1908 में उन्होंने बम्बई के सुप्रसिद्ध एलफिस्टन महाविद्यालय में प्रवेश लिया था । 1912 में इन्होंने बी.ए. की परीक्षा उतीर्ण की । यहां की कॉलेज का ब्राह्मण होटल वाला उसे न तो चाय पिलाता था और न ही पानी । 1912 में अंग्रेजी, फारसी, राजनीति व अर्थशास्त्र बी.ए. करने के बाद इन्होंने बड़ौदा सरकार में सेना में लेफिटंनेट के पद पर कार्य किया । उस समय यह सहज अंदाजा लगाया जा सकता है कि उच्च पदों पर सवर्णों का ही कब्जा होगा तथा वें स्नातक भीमराव के साथ किस तरह का व्यवहार करते होगें । दिन–प्रतिदिन होने वाले घृणात्मक व्यवहार भीमराव अम्बेडकर को लगातार मजबूत बना रहे थे । इसी कड़ी में बड़ौदा रियासत भी अपवाद नहीं थी । अभी मुश्किल से 15 दिन भी नहीं हुए थे कि उनके पिता की बीमारी का तार आ गया । इसी वजह से भीमराव को सतारा होते हुए बम्बई पहुँचे तो पिता से अंतिम मुलाकात हुई । भीमराव ने अपने पिता की आँखों में एक मार्गदर्शन मिला कि झुकना नहीं है बस आगें बढ़ना है । माता–पिता का देहान्त हो जाने पर अब भीमराव पूर्णत जिम्मेवारी उन्हीं पर आ गई । परन्तु भीमराव आगे अपनी पढ़ाई करना चाहते थे । भाई आनन्दराव के सिवा काम करने वाला कोई नही था ।

इन्हीं दिनों बड़ौदा रियासत ने कुछ विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा अमेरिका भेजने का निश्चय किया । भीमराव अम्बेडकर को भी इस छात्रवृत्रि हेतु चुना गया जिसके साथ में शर्तें भी थी । 4 जून 1913 को भीमराव ने बड़ौदा जाकर संविदा पर हस्ताक्षर किये । यह अनुबन्ध हुआ कि शिक्षा के बाद वें 10 वर्ष तक बड़ौदा राज्य की सेवा करेंगे । फलतः 21 जुलाई 1913 का दिन आया जब वे अमेरिका रवाना हुए

IJRTS Publications
A Venture of IJRTS Takshila Foundation

ISBN: 978-81-966175-5-4

। एक अछूत फौलादी विद्यार्थी जिसे पुस्तक व शिक्षा को छूने तक का अधिकार ना था, आज विश्व प्रसिद्ध न्यूयार्क स्थित कोलम्बिया विश्वविद्यालय में पहुँचा । यह दिन न केवल भीमराव के लिये अपितु वास्वत में सम्पूर्ण मानवजाति के लिये अहम दिन था जब समानता के सपने संजोये पहला महार जाति का छात्र विदेश पहुँचा उच्च कानूनों की शिक्षा प्राप्त की आगे चल कर वे भारत पहले कानून मन्त्री भी बने ।

बड़ौदा के राजा के अनुबंध के आधार पर भीमराव कोलम्बिया गये। वहाँ जाकर उन्होंने अमेरिका के वातावरण तथा भारतीय वातावरण की तुलना का आभास किया । वहाँ जाकर भीमराव ने पाश्चात्य विचारों को पढ़ा तथा इन विचारों ने भीमराव को पूर्णतः हिला कर रख दिया । यहाँ का वातावरण भारतीय की तरह ऊँचनीच तथा छुआछुत भरा नहीं था अतः भीमराव को स्वतन्त्रता, समानता तथा भार्तृत्व के वातावरण में पाश्चात्य विचारों को ग्रहण करने का अवसर मिला । यहाँ भीमराव जाति के कलंक से मुक्त थे व समानता के दर्जे के आधार पर आ जा सकते थे। इस विश्वविद्यालय में प्रसिद्ध अर्थशास्त्री प्रो. सेलिगमैन उनके अध्यापक थे। अमेरिका प्रवास के दौरान ही इनकी भेंट लाला लाजपतराय से हुई । वे दोनों भारत में स्वतन्त्रता संग्राम के बारे में चर्चा किया करते थे । इस तरह भीमराव अम्बेडकर ने विद्यार्थी जीवन में ही देशभक्ति के विचारों और आदर्शों तथा पश्चिमी उदारवादी लोकतान्त्रिक विचारों को आत्मसात किया । वर्ष 1915 में उन्होंने अपने शोध–विषय एन्शिएंट इंडियन कामर्स, के लिये एम.ए. (अर्थशास्त्र) की डिग्री प्राप्त की । उससे अगले वर्ष उन्होंने एन्थ्रोपोलोजी सेमिनार में 'दि कास्ट्स इन इंडिया, देअर मैकेनिज्म जैनेसिस एण्ड डिवलपमेंट' नामक शीर्षक से डॉ. गोल्डेर वीजर द्वारा नृवंश विज्ञान पर आयोजित विचार गोष्ठी में लेख पढ़ा । इसी लेख में उन्होंने कहा कि सजातीय विवाह ही जातीय सार है । उनके शोध–विषय 'नेशनल डिविलपमेंट फॉर इंडिया : ए हिस्टोरिक एण्ड एनालिटिकल स्टडी' के लिये पी.एच.डी. की उपाधि प्रदान की गयी ।

अमेरिकी प्रवास के दौरान भीमराव अम्बेडकर ने बहुत गहन अध्ययन किया । यहाँ उन्होंने समाजशास्त्र, नृतत्वशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र तथा अन्य विषयों का गहन अध्ययन किया तथा भारतीय समाज के प्रति अपने रवैये को उजागर किया । हर समय भारत में अपमान से पीड़ित इस अछूत बालक ने अमेरिका में एम.ए. तथा पीएच.डी. कर इतिहास बना दिया तथा सिद्ध कर दिया कि योग्यता जाति देखकर नहीं आती वरन् अवसरों के आधार पर निर्भर करती है । यहीं रहकर वे अमेरिकी नीग्रों आन्दोलन से प्रभावित हुए तथा इसी तरह के अधिकारों को भारत में लागू करवाने की विचारधारा पर काम करने हेतु प्रेरित हुए ।

इस तरह साधारण व्यक्ति भीमराव अम्बेडकर डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर बन गये । अतः 1916 में पी॰एच॰डी॰ का शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करने के बाद ही वे लंदन आ गये और यहाँ इन्होंने विधि के अध्ययन हेतु 'दी

ISBN: 978-81-966175-5-4

ग्रेज इन' और अर्थशास्त्र में अध्ययन हेतु विश्व प्रसिद्ध संस्था 'लन्दन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स एण्ड पॉलिटिकल साईन्स' में दाखिला लिया । इस दौरान बड़ौदा नरेश का संदेश पाकर भीमराव का वापस अपनी पढ़ाई अधूरी छोड़कर वापस भारत आना पड़ा व 'मिलिट्री सचिव' के पद पर कार्य करना पड़ा । यूरोप व अमेरिका के भीमराव के अनुभव के आधार उनके मन से यह भावना बिल्कुल निकल चुकी थी कि वे एक अछूत है परन्तु बड़ौदा में उनके साथ जो घअित हुआ उसने सिद्ध किया कि एक अछूत जो हिन्दू के लिये अछूत है, पारसी हेतू भी अछूत है । यहाँ पर अपने प्रवास के दौरान इनके मित्र व सराय के मालिक ने इन्हें अछूत होने की वजह से अपने–अपने स्थानों पर पनाह नहीं दी थी ।

बड़ौदा रियासत के कार्यालय का वातावरण भी उचित नहीं था । उनके साथ गंभीर किस्म की छुआछुत की जाती थी । फलतः 1917 में ही अम्बेडकर नौकरी से त्यागपत्र देकर वापस बम्बई लौट आये । 1917 में ही कलकत्ता अधिवेशन में कांग्रेस ने दलित समस्या के बारे में एक प्रस्ताव पारित किया जिससे भीमराव सन्तुष्ट नहीं थे । अपनी आर्थिक सन्तुष्टि हेतु इन्होंने निजी ट्यूशन व शेयर बाजार में दलालों को परामर्श देना शुरू किया । इनकी सिन्हम कॉलेज में राजनीति अर्थशास्त्र के अध्यापक के रूप में भी नियुक्ति हुई परन्तु वहाँ भी साथी प्राध्यापकों का व्यवहार तार्किक नहीं था । इसी दौरान उनकी मुलाकात कोल्हापुर के महाराजा छत्रपति से हुई जिनकी सहायता के आधार पर 'मूकनायक' नामक पात्रिका पत्र निकलना आरम्भ हुआ । यह पत्र दलित विमर्श के आधार पर काम करता था परन्तु लंदन मिशन को ध्यान में रखते हुए भीमराव अपनी संचित पूंजी, अपने दोस्त नवल भटैना व कोल्हापुर महाराज से प्राप्त आर्थिक सहायता के आधार पर अपनी पढ़ाई पुरी करने हेतु दोबारा लन्दन के लिये 1920 में रवाना हुए ।

लन्दन में रहकर इन्होंने जून 1921 में मास्टर ऑफ साईन्स की उपाधि प्राविन्शियल डिसेन्ट्रलाईजेशन ऑफ इम्पीरियन फाइनैन्स इन ब्रिट्रिश इंडिया नामक विषय पर की । 1922 में ही "प्राब्लम ऑफ रूपी" नामक शीर्षक पर प्रसिद्ध शोध प्रबन्ध पर डी.एस.सी यानि डॉक्टर ऑफ साइन्स की उपाधि प्राप्त की । इसके साथ ही इन्होंने 'बार एट लॉ' की उपाधि भी प्राप्त की । ज्ञान को प्राप्त करने के कारण ये जर्मनी के बोन विश्व विद्यालय में भी संस्कृत का अध्ययन करने हेतु गये । यही पर उन्होंने अर्थशास्त्र का भी गहन अध्ययन किया परन्तु आर्थिक कठिनाईयों की वजह से भीमराव आखिरकार 1923 में वापस भारत आ गये । भारत आते ही इन्होंने वकालत करनी शुरू कर दी । अछूत द्वारा वकालत करने पर उस समय मनुवादियों में संकीर्ण मानसिकता आना लाजमी था तो इसी वजह से उनकी वकालत का काम भी अच्छा नहीं चला था । लगातार छुआछुत के कारण अब भीमराव का ध्येय अपने समाज सुधार की तरफ हो गया था। अपनी आजीविका चलाने हेतू इन्होंने बाटलीवाय इन्स्टीट्यूट ऑफ अकाउन्टैन्सी में कानून के पार्ट टाईम प्राध्यापक के रूप में काम करना पड़ा । दूसरी तरफ अपने दलितोउद्वार हेतु 9 मार्च 1924 को दामोदर हॉल, परेल (बम्बई) में 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' हेतु सभा का आयोजन किया व

ISBN: 978-81-966175-5-4

फलतः 4 दिसम्बर 1924 को सभा बनाई । जनवरी 1925 में इस सभा ने शोलापुर में एक छात्रावास का शुभारम्भ किया । इस तरह 'मूकनायक' तथा 'बहिष्कृत भारत' के आधार पर 1925 तक भीमराव अछूतों के नेता के तौर पर प्रसिद्ध हो गये थे । जिसके चलते 1927 में इन्हें बम्बई विधान परिषद का सदस्य मनोनीत किया गया ।

इस उपलब्धि पर दलितों ने मुम्बई में भीमराव को सम्मानित किया व उन्हें रूपयों की एक थैली भेंट की । भीमराव ने इस थैली को बहिष्कृत हितकारिणी सभा को भेंट कर दिया । इसी दौरान मई 1926 में रहिमतपुर (गोरेगाँव) में जिला स्तरीय महार सम्मेलन हुआ जिसमें डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने दलितों में जागृति पैदा की तथा उन्हें उनके अधिकारों व हिन्दू धर्म के बारे में बताया कि किस तरह से धर्म ने उनके अधिकारों का हनन किया है तो उसके परिणामस्वरूप 25 दिसम्बर 1927 को महाड़ सम्मेलन में मनुस्मृति जलाई गई । मनुस्मृति जो हिन्दूओं का पवित्रतम ग्रन्थ माना जाता था, उस ग्रन्थ को जलाकर भीमराव अम्बेडकर ने अपने कर्म को प्रदर्शित कर दिया । यहाँ पर मनुस्मृति जलाना विरोध का प्रतीक था कि किस तरह से यहाँ मनुस्मृति के आधार पर होने वाले भेदभाव का विरोध करते हैं । महाड़ सत्याग्रह पूना में उनका सबसे प्रमुख कार्य था । यह सत्याग्रह पूना में तालाब के पानी पर दलितों के अधिकार हेतू किया गया । भीमराव के नेतृत्वकारी जुलूस ने चावदार का पानी पिया तो उन्हें सवर्णों के विरोध का सामना करना पड़ा तथा बाद में सवर्णों ने उस तालाब पर अनुष्ठान करके उसकी अपनी तरह से पवित्र किया । चावदार तालाब का पानी पीना समानता व छुआछुत समाप्ति की तरफ भीमराव का अनुपम कार्य था । इसी दिन से भीमराव का प्रचार देश के सारे कोनों में फैल गया । 28 मार्च 1928 को अम्बेडकर ने बेगार के खिलाफ आन्दोलन चलाया । जून 1928 में गवर्नमेन्ट ला कॉलेज बम्बई में प्रोफेसर नियुक्त हुए तथा माच्र 1929 तक वहीं कार्य किया । इसी दौरान 'डिप्रेस्ड क्लासेज एजुकेशन सोसाईटी' नामक एक संगठन बनाया ।

साईमन कमीशन के दौरा उन्होंने कमीशन को बताया कि उनके साथ किस तरह का व्यवहार किया जाता है तथा कहा कि:– "सभी मनुष्य एक ही मिट्टी के बने हुए है और उन्हें यह अधिकार भी है कि अपने साथ अच्छे व्यवहार की मांग करें ।" इस तरह बहुत ही मजबूत इरादों व तर्कों के साथ भीमराव अम्बेडकर ने अपनी बात रखी । वर्ष 1930 में इन्होंने कालाराम मन्दिर (नासिक) में प्रवेश के लिये आन्दोलन शुरू किया जिसमें लगभग 500 महलाऐं तथा 15 हजार पुरूषों ने हिस्सा लिया और यह लगातार 5 वर्षों तक चलता रहा । 2 मार्च 1930 का दिन इसलिए निश्चित किया गया ताकि हिन्दुओं और गाँधीजी को यह अनुभव हो सके कि जो शिकायत उन्हें अंग्रेजी सता से है, वही शिकायत अछूतों को हिन्दूओं की सत्ता से भी है ।

ISBN: 978-81-966175-5-4

नासिक सत्याग्रह साथ–साथ चलता रहा, इसी दौरान 1930 में भारत के नये संविधान पर विचार हेतु लंदन में गोलमेज सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें भीमराव दलितों के प्रतिनिधि के तौर पर सम्मिलित हुए । यहाँ पर उन्होंने अपनी वहीं दलित आरक्षण की माँग दोहराई । उन्होंने अपने भाषण में कहा कि "जिन लोगों की स्थिति गुलामों से भी बदतर है तथा जिनकी जनसंख्या भारत में फ्रांस की जनसंख्या के बराबर है उन्हीं लोगों की हैसियत से मैं यहाँ आया हूँ ।" यहाँ पर भीमराव ने दलित वर्गों के लिये पृथक निर्वाचक मण्डल की मांग रखी जिसे ब्रिटिश सरकार द्वारा 1932 में साम्प्रदायिक पंचाट के रूप में माना । गाँधी जी ने इस पर अपनी तीखी प्रतिक्रिया दी तथा कहा कि यह हिन्दूओं को तोड़ने की बात है । गाँधीजी तथा हिन्दूओं को यह निर्णय स्वीकार नहीं था । अतः गाँधी जी ने इसके विरूद्ध आमरण अनशन शुरू कर दिया । अतः फलतः गाँधी तथा अम्बेडकर के मध्य 24 सितम्बर 1932 को पूना की यरवदा जेल में समझौता हुआ जिसे पूना–पैक्ट के नाम से जाना जाता है कि भीमराव अम्बेडकर ने गाँधी को जीवन प्रदान किया परन्तु इस घटना से तथा नासिक के आन्दोलन से भीमराव के मन पर हिन्दूधर्म का ऐसा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने विश्लेषण किया कि हिन्दू धर्म में सूधार नहीं हो सकता है ।

1930 तथा 1934 की घटनाओं ने जिनमें क्रमशः अछूतों की शिकायत समिति के सदस्य की वजह से वो चालीस गाँव जाने के दौरान, ताँगे वाले ने उन्हें मना किया तथा फलतः उन्हें चोट लगी तथा 1934 में दौलताबाद के हिन्दू राजा रामदेव राय के किले का भी वर्णन है जहाँ अछूतपन का शिकार होना पड़ा । इन सभी समकालीन घटनाओं ने उनके मन पर गहरी चोट लगाई फलतः सितम्बर 1935 को यवला सम्मेलन में दलितों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने ऐतिहासिक घोषण की की "छुआछुत मुझे हिन्दू धर्म छोड़ने को बाध्य कर रही है । यह मेरा दुर्भाग्य है कि मैं अछूत पैदा हुआ परंतु इसमें मेरी कोई गलती नहीं थी । लेकिन मैं एक हिन्दू के रूप में मरूंगा नहीं । यह मेरे वश में है ।" इसी दौरान 27 मई उनकी धर्मपत्नी रमाबाई की भी मृत्यु हो गई । दलितों के साथ होने वाले सामाजिक तथा धार्मिक भेदभावों के कारण वे अपनी धर्मपत्नी की अंतिम इच्छा भी पुरी नहीं कर सके, क्योंकि श्रीमती रमाबाई ने अपनी अंतिम इच्छा प्रकट की थी कि मुझे पन्दरपुर भगवान के दर्शन के लिये ले चले । अतः बहुत दुखी मन से उन्होंने अपनी पत्नी से कहा कि ऐसे भगवान के दर्शन का क्या फायदा जिसके दरबार में हमें जाने का भी अधिकार नहीं है ।

अपनी पत्नी की मृत्यु के पश्चात् भीमराव अम्बेडकर इतने दुखी हुए कि कई दिनों तक वे अपने घर से बाहर नहीं निकले । वर्ष 1936 में डॉ. अम्बेडकर ने इन्डीपेन्डेन्ट लेबर पार्टी ऑफ इंडिया की स्थापना की । भारत सरकार अधिनियम 1935 के उपबंधों के आधार पर देश में 1937 में भारत के पहले लोकप्रिय विधानमण्डलों के निर्वाचन हेतू चुनाव हुए जिनमें भीमराव की पार्टी ने 17 सीटों पर चुनाव लड़ते हुए 15 सीटों पर बम्बई में चुनाव जीता । वर्ष 1935 में ही भीमराव अम्बेडकर ने गर्वनमेंट लॉ कॉलेज के

Publications
A Venture of IJRTS Takshila Foundation

ISBN: 978-81-966175-5-4

प्रिसीपल के पद पर कार्य किया । 1936 में "जात–पात तौड़क मंडल" की ओर से अम्बेडकर को वार्षिक सम्मेलन का अध्यक्ष चुना गया । जिसमें दिये गये भाषण से खिन्न होकर कान्फ्रैस के प्रबन्धकों ने यह सम्मेलन रद्द कर दिया । इसमें अम्बेडकर ने कहा कि "अगर हमें जीवित रहना है तो जाति–पाति को मिटाना होगा तथा हिन्दुओं को चेतावनी देते हुए कहा कि वर्ण व्यवस्था को नष्ट किऐ बिना हिन्दूओं में सामाजिक तथा धार्मिक एकता स्थापित नहीं की जा सकती है ।" इसी दौरान बम्बई विधान परिषद के सदस्य रहते हुए भीमराव अम्बेडकर ने समाज की भलाई के अनेक कार्य किये । अपनी प्रखर भाषण क्षमता और विद्ववता के कारण अम्बेडकर वाद–विवाद में कड़ा मुकाबला करते थे ।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि जब वह सभा में बोलने हेतू खड़े होते तो सभी सदस्य बड़े ध्यानपूर्वक उनके भाषण को सुनते थे । इनकी कानूनी कुशाग्रता, शैक्षिक योग्यता, वार्ताकार के रूप में इनकी निपुणता और प्रशासनिक योग्यता को देखते हुए तत्कालीन वायसराय ने उन्हें 1942 में रक्षा परिषद का सदस्य नियुक्त किया गया तथा बाद में उन्हें श्रम परिषद का कार्यभार भी सौंपा गया जिसके पदभार पर रहते हुए उन्होंने रोजगार कार्यालय, श्रम प्रशासन, गठित किये तथा न्यूनतम वेतन विधेयक भी पेश किया गया । यहाँ ये 1946 तक काम करते रहे । 1946 में ही अनुसूचित जाति, जनजाति के लिये सरकारी सेवाओं में आरक्षण तथा विशेष आर्थिक सहायता लेने में सफल हुए । 20 जून 1946 को भीमराव अम्बेडकर ने मुम्बई में सिद्धार्थ कॉलेज की स्थापना की । यहाँ यह देखा जा सकता है कि 1935 के दौर से ही इनका झुकाव बुद्ध धर्म की ओर हो चुका था । इसी दौरान उनका सामाजिक बदलाव मिशन भी दूसरी तरफ चल रहा था । इन्होंने अपनी पुरानी इण्डिपेडेन्ट लेबर पार्टी के स्थान पर इसको अखिल भारतीय अनूसूचित जाति संघ में बदल दिया । गाँधी द्वारा दिये गये नारे 'करो या मरो' के दौरान भीमराव ने सरकारी पद से त्यागपत्र नहीं दिया । महात्मा गाँधी से उनके साम्प्रदायिक पंचाट तथा हरिजन शब्द पर पहले भी विरोध हो चुका था ।

1946 तक आते–आते भारत की स्वतन्त्रता की मांग बहुत जोर पकड़ चुकी थी । फलतः 15 अगस्त 1947 को भारत आजाद हुआ । वर्ष 1945–46 में अम्बेडकर ने अपने ही शिक्षण संस्थान 'दि पीपुल्स एजुकेशन सोसाईटी' की स्थापना की तथा इसके तहत बम्बई में पहला कॉलेज 'सिद्धार्थ कॉलेज ऑफ आर्ट एण्ड साईन्स' खोला गया । भीमराव अम्बेडकर का स्वास्थ्य भी उन दिनों अच्छा नहीं चल रहा था तो वे सामान्य अपनी मेडिकल चेकअप के लिये डॉ. राव तथा डॉ. मालवणकर के पास आते थे जहाँ उनकी मुलाकात डॉ. शारदा कबीर से हुई जिन्होंने बाद में अप्रैल 1948 में दूसरी शादी रचा ली । यहाँ यह वर्णित है कि डॉ॰ शारदा कबीर ब्राह्मण जाति से संबंधित थी और भीमराव अछूत माने वाले वाली महार जाति से । यह भी एक अनुपम सामाजिक बदलाव की घटना थी । नवम्बर 1946 में भीमराव अम्बेडकर को भारत की संविधान सभी का सदस्य चुना गया और यह भी आश्यर्च की बात है कि अपनी कर्मभूमि महाराष्ट्र से निर्वाचित होने की बजाय वे पश्चिमी बंगाल से चुने गये थे । जोगेन्द्रनाथ मंडल की

ISBN: 978-81-966175-5-4

सहायकता और प्रयास से बंगाल विधिमण्डल की दलित वर्ग के प्रतिनिधियों ने मुस्लिम लीग के समर्थन से इन्हें संविधान सभा में पहुँचाया ।

संविधान सभा में भीमराव को 29 अगस्त 1947 की मसौदा समिति का अध्यक्ष चुना गया । भीमराव के नेतृत्व में उनकी टीम ने कुल मिलाकर 141 बैठकों में अंतरिम संविधान तैयार किया । उन्हें अकेले ही बड़ी प्रमुखता से संविधान बनाने का कार्य किया और आगे चलकर भारत के संविधान निर्माता कहे जाने लगे, इसके संबंध में श्री टी.टी. कृष्णामाचारी ने निम्नलिखित व्क्तव्य दिया है : क्योंकि कमेटी के दूसरे सदस्य स्वास्थ्य एवं निजि कारणों का हवाला देकर कार्य से पल्ला झाड़ते नजर आऐ ।

“सदन को शायद इस बात की जानकारी है कि आपके द्वारा नामित सात सदस्यों में से एक ने इस्तीफा दे दिया था, एक सदस्य की मृत्यु हो गई थी, एक सदस्य अमेरिका में थे, एक अन्य राज्य संबंधी मामलों में उलझे हुए थे । एक या दो दिल्ली बैठक में भाग नहीं ले सके । इस प्रकार, अंततः संविधान का प्रारूप तैयार करने का भार डॉ. भीमराव पर आ पड़ा ओर मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस कार्य को प्रशंसनीय रूप से पूरा करने के लिये हम उनके आभारी है ।” प्रारूप समिति द्वारा तैयार किया गया संविधान डॉ. अम्बेडकर द्वारा 4 नवम्बर 1948 को प्रस्तुत करते हुए कहा, “प्रारूप समिति द्वारा तैयार किया गया संविधान व्यावहारिक है । देश को शांतिकाल तथा युद्धकाल के दौरान नियन्त्रित करने हेतू यह पर्याप्त लोचशील और पूरी तरह से समक्षम हैं । अम्बेडकर ने संविधान सभा पेश करते हुए कहा वास्तव में मैं यह कह सकता हूँ कि अगर नए संविधान के अन्तर्गत कुछ गलत होता है तो इसका कारण यह नहीं होगा कि हमारे संविधान में कोई बुराई है बल्कि यह होगा कि देशवासियों का चरित्र भ्रष्ट है ।” संविधान सभा द्वारा संविधान स्वीकृत किये जाने से एक दिन पहले सदस्यों ने भीमराव का आभार व्यक्त किया तथा उनकी प्रशंसा की ।

दूसरी तरफ भीमराव अन्तरिम सरकार में भारत के प्रथम विधिमंत्री बने व सितम्बर 1951 में इन्होंने भारतीय नारी के लिए महान बिल ‘हिन्दू कोड बिल’ पेश किया परन्तु दुर्भावना व जातीयदंभ, धर्म की वजह से यह पास न हो सका । हिन्दू कोड के सभी समर्थक यहाँ तक कि नेहरू भी इसके विरूद्ध हो गये तो फलतः 1951 में इन्होंने मंत्रिमण्डल से त्यागपत्र दे दिया । इस तरह लगातार अपमान व छुआछुत का शिकार होने पर ये हिन्दू धर्म से विमुख हो चुके थे । हिन्दू धर्म छोड़ने का ऐलान ये 1935 के यवला सम्मेलन में कर चुके थे । आगे 1938–40 के दौरान ये सिख धर्म की ओर उन्मुख हुए परन्तु अंतत 1956 में नागपुर में इन्होंने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया । बौद्ध धर्म में इनका विश्वास इसलिए बढ़ा क्योंकि उन्होंने महसूस किया कि बौद्ध धर्म का आदर्श समानता और नैतिकता है जबकि अन्य धर्मों के संस्थापकों ने स्वयं को ‘मोक्षदाता’ होने का दावा किया था ।

IJRTS Publications
A Venture of IJRTS Takshila Foundation

ISBN: 978-81-966175-5-4

1952 के दौरान ही 5 जून को कोलम्बिया विश्वविद्यालय दीक्षांत समारोह में इन्हें डॉक्टर ऑफ लॉज की उपाधि दी जिसमें भारतीय संविधान के शिल्पकार, मंत्रिमण्डल का सदस्य और राज्यसभा के सभासद, भारतीय नागरिकों में एक प्रमुख नागरिक, महान समाज सुधारक और मानवीय अधिकारों का आधार स्तम्भ पराक्रमी महापुरूष शब्दों को लिखा है। इसके बाद 12 जनवरी 1953 को उस्मानिया विश्वविद्यालय हैदराबाद ने डॉक्टर ऑफ लिटरेचर की मानद उपाधि से भीमराव को सम्मानित किया। भारतीय संविधान के प्रावधानों के आधार पर 1952 में पहले आम चुनाव में भीमराव उत्तरी मुम्बई की सुरक्षित सीट पर चुनाव लड़े परन्तु जीत न सके व काजरोलकर चुनाव जीत गये । उनका सारा ध्यान सामाजिक सुधारों की ओर रहा महिला अन्दोलन अधिकार, समान्ता सामाजिक भेदभाव को दूर करने के सिवाये व राजनीतिक को समय नहीं दे पाए ।

IJRTS
Publications
A Venture of IJRTS Takshila Foundation

IJRTS TAKSHILA FOUNDATION

AN EDITED BOOK

IJRTS Takshila Foundation

Reg. No. U80902HR2022NPL104244

Plant a Tree! Get Air for Free! www.ijrtspublications.org

A Complete Portal for all your Publication Support

9 788196 617554

ISBN: 978-81-966175-5-4